Shane Gause Aazam (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 328
Weekly Booklet : 328

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी मुता़बिक़ दिसम्बर 2019 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी मुज़ाकरे से क़ब्ल होने वाले बयान का तह़रीरी गुलदस्ता, (मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा) बनाम

मज़ारे ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ

शाने ग़ौसे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ

अल्लाह पाक के नज़्दीक होने का वज़ीफ़ा 01
सोशल मीडिया की एक पोस्ट 08
वस्वसा और उस का जवाब 08
70 हज़ार का इज्तिमाअ़ 15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**शाने ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
सिने त़बाअ़त	:	जुमादल ऊला **1445** हि., नवेम्बर **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**शाने ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج٥١ص١٣٨دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

शाने ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

अल्लाह पाक के नज़्दीक होने का वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि जिस क़दर तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान के, तुम्हारे ख़यालात तुम्हारे दिल के, तुम्हारी रूह़ तुम्हारे बदन के, तुम्हारी बीनाई का नूर तुम्हारी आंख के क़रीब है, मैं उस से भी ज़ियादा तुम्हारे क़रीब हो जाऊं ? अ़र्ज़ किया : हां ! फ़रमाया : फिर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद भेजो ।

(حلیۃ الاولیاء،6/33،رقم:7716۔مطالع المسرات(اردو)،ص69)

सब का है आक़ा नामे मुह़म्मद — *नूह़ो ख़लीलो मूसा व ईसा*
जिस ने पुकारा नामे मुह़म्मद — *पाईं मुरादें दोनों जहां में*
है इक वसीला नामे मुह़म्मद — *दोनों जहां में दुन्या व दीं में*
मुझ को सुनाना नामे मुह़म्मद — *रख्खो लह़द में जिस दम अ़ज़ीज़ो*
देगा सहारा नामे मुह़म्मद — *रोज़े क़ियामत मीज़ानो पुल पर*

(क़बालए बख़्शिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शैत़ान को पहचान लिया

शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के शहज़ादए गिरामी ह़ज़रते शैख़ अबू नस्र मूसा बिन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : मेरे वालिद (या'नी ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللهِعَلَيْه) ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अपने एक सफ़र में सह़रा की त़रफ़ निकला और चन्द दिन वहां ठहरा मगर मुझे पानी नहीं मिलता था, जब मुझे शदीद प्यास मह़सूस हुई तो एक बादल ने मुझ पर साया किया और उस में से कुछ बारिश के क़त़रे गिरे, जिन्हें मैं ने पी लिया, फिर मैं ने एक नूर देखा जिस से आस्मान का कनारा रोशन हो गया और एक शक्ल ज़ाहिर हुई जिस से मैं ने एक आवाज़ सुनी : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! मैं तेरा रब हूं और मैं ने तुम पर ह़राम चीज़ें ह़लाल कर दी हैं। तो मेरे वालिदे मोह़तरम ग़ौसुल आ'ज़म फ़रमाते हैं कि मैं ने اَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ कर कहा : "ऐ शैत़ाने लईन ! दूर हो जा।" तो रोशन कनारा अंधेरे में तब्दील हो गया और वोह शक्ल धूआं बन गई, फिर उस ने मुझ से कहा : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! इस से पहले मैं सत्तर औलिया को गुमराह कर चुका हूं मगर तुझे तेरे इ़ल्म ने बचा लिया। मैं ने कहा : "येह सिर्फ़ मेरे रब्बे क़दीर का फ़ज़्लो एह़सान है।" शहज़ादए ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अबू नस्र मूसा رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : आप ने किस त़रह़ जाना कि वोह शैत़ान है ? आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की इस बात से कि बेशक मैं ने तेरे लिये ह़राम चीज़ें ह़लाल कर दीं।" (بہجۃ الاسرار، ص228) हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : येह ख़याल करना कि शरई मुकल्लफ़ात (अह़कामात) किसी ह़ाल में साक़ित़ (या'नी मुआ़फ़) हो जाते हैं, ग़लत़ है। फ़र्ज़ इ़बादात का छोड़ना ज़िन्दीक़ियत (या'नी बे दीनी) है। ह़राम कामों का करना मा'सियत (या'नी गुनाह) है। फ़र्ज़ किसी ह़ाल में साक़ित़ (या'नी मुआ़फ़) नहीं होता। (حقائق عن التصوف، ص242)

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! देखा आप ने कि नमाज़ रोज़ा फ़राइज़ किसी को भी मुआफ़ नहीं होते, जैसा कि कुछ नाम के पीर जो नमाज़ नहीं पढ़ते। जब उन के मुरीदीन से पूछा जाए तो कहते हैं कि हमारे पीर साहिब बग़दाद में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते हैं और फिर अजमेर में ज़ोहर की नमाज़ में होते हैं, मदीने में रोज़ाना इशा पढ़ते हैं तो इस त़रह़ की बातों में नहीं आना चाहिये कि जब सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी नमाज़ मुआफ़ नहीं थी बल्कि हम पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ और हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर छे नमाज़ें फ़र्ज़, जी हां ! हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तहज्जुद भी फ़र्ज़ थी, मज़ीद येह कि ग़ौसे पाक को शैत़ान ने धोका देने की कोशिश की लेकिन आप ने उस के वार को नाकाम बना दिया, उस ने दूसरा वार किया कि अ़ब्दुल क़ादिर आप को आप के इ़ल्म ने बचा लिया तो ग़ौसे पाक इस को भी समझ गए कि मेरे इ़ल्म ने नहीं, मेरे रब ने मुझे बचा लिया। लिहाज़ा इस इ़ल्म पर ग़ुरूर नहीं करना चाहिये, हर ह़ाल में रब्बे करीम की रह़मत पर नज़र रखनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علی مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! येह भी मा'लूम हुवा कि शैत़ान बड़ा धोकेबाज़ है, वोह त़रह़ त़रह़ के जादूई करतब भी दिखाता है, उस के वार से हमेशा ख़बरदार रहना चाहिये, अपनी अ़क़्लो होशियारी पर ए'तिमाद करने के बजाए **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम पर नज़र रखनी चाहिये। जिस के पास माल होता है उस के पास चोर आता है और जिस के पास दौलते ईमान है उस के पास ईमान का लुटेरा शैत़ान ज़रूर आता है नीज़ जिस

के पास ईमान जितना मज़्बूत होगा उस के पास उसी क़दर नेकियों के ख़ज़ाने की भी कसरत होगी लिहाज़ा वहां शैतान बहुत ज़ियादा ज़ोर लगाएगा। हमारे पीरो मुर्शिद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَةُاللّٰهِ عَلَيۡه के पास ईमान व आ'माल के ख़ज़ाने की कसरत देख कर शैतान ने डाका डालने की कई बार कोशिश की मगर اَلۡحَمۡدُلِلّٰه ! वोह नाकामो ना मुराद ही रहा।

बचा लो दुश्मनों के वार से या ग़ौसे जीलानी बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या शहे बग़दाद
वसीला चार यारों का ख़ुदा से बख़्शवा दीजे करम फ़रमाइये मुझ पर ख़ुदारा या शहे बग़दाद
अगर्चे लाख पापी है मगर अ़त्तार किस का है ? तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहे बग़दाद

(वसाइले बख़्शिश, स. 544)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

एक जिन्न की तौबा

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحۡمَةُاللّٰهِ عَلَيۡه की इ़बादत पर इस्तिक़ामत आप की बहुत बड़ी करामत थी। मश्हूर मक़ूला है : اَلۡاِسۡتِقَامَةُ فَوۡقَ الۡكَرَامَةِ या'नी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है।

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हम जोश में आ कर कुछ काम करते हैं फिर ठन्डे हो जाते हैं, जिसे सोडा वॉटर के जोश का नाम दिया जाता है। मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक की इस्तिक़ामत की भी क्या शान है ! चुनान्चे शहन्शाहे बग़दाद, सरकारे ग़ौसे पाक رَحۡمَةُاللّٰهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : एक बार मैं जामेअ़ मन्सूर में मसरूफ़े नमाज़ था कि सांप आ गया और उस ने मेरे सज्दे की जगह पर मुंह खोल दिया, मैं ने उसे हटा कर सज्दा किया मगर वोह मेरी गरदन से लिपटता हुवा मेरी एक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, जब मैं ने सलाम फेरा तो वोह ग़ाइब हो गया। दूसरे दिन जब मैं

उसी मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मुझे एक बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी नज़र आया, मैं ने अन्दाज़ा लगा लिया कि येह शख़्स इन्सान नहीं बल्कि कोई जिन्न है, वोह मुझ से कहने लगा कि मैं आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को तंग करने वाला वोही सांप हूं। मैं ने सांप की शक्ल में बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को आज़्माया है मगर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जैसा किसी को भी साबित क़दम नहीं पाया। फिर उस जिन्न ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुबारक हाथ पर तौबा कर ली।

(بہجۃ الاسرار، ص169 ملخصًا)

हुए देख कर तुझ को काफ़िर मुसल्मां *बने संगदिल मोम सां ग़ौसे आ'ज़म*

(क़बालए बख़्शिश, स. 183)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (या'नी नमाज़ में **अल्लाह** पाक के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ जिस्मानी और ज़ेह्नी तवज्जोह) हो तो ऐसा कि नमाज़ में ख़्वाह सांप ही लिपट जाए मगर **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से तवज्जोह न हटे। आह ! एक हमारी नमाज़ है कि अगर हम पर मख्खी भी बैठ जाए तो परेशान हो जाएं, मा'मूली ख़ारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके, इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि जिन्नात भी हमारे ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद बन जाते हैं।

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे लासानी, क़िन्दीले नूरानी, शैख़ मुह़युद्दीन, अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की चालीस साल तक ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते थे और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मा'मूल था कि जब बे वुज़ू होते थे तो उसी वक़्त वुज़ू फ़रमा कर दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ लेते थे। (بہجۃ الاسرار، ص164)

तहिय्यतुल वुज़ू की फ़ज़ीलत

ऐ मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक के दीवानो ! वुज़ू करने के बा'द अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करने को "तहिय्यतुल वुज़ू" कहते हैं। "तहिय्यतुल वुज़ू" की बड़ी फ़ज़ीलत है और येह नेक बनने का नुस्ख़ा बनाम "नेक आ'माल" में से एक नेक अ़मल भी है। सहीह़ मुस्लिम शरीफ़, ह़दीस नम्बर 553 में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करे और दो रक्अ़तें क़ल्बी तवज्जोह (या'नी दिल की तवज्जोह) से अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी। (مسلم، ص118، حدیث:553)

हो करम ! हुस्ने अ़मल आह ! नहीं है कोई न वज़ाइफ़ हैं न अज़्कार हैं ग़ौसे आ'ज़म

ह़श्र के रोज़ हमारी भी शफ़ाअ़त करना आह ! हम सख़्त गुनहगार हैं ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 561)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ौसे पाक की शब बेदारी

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बहुत ज़ियादा इ़बादतो रियाज़त और कुरआने करीम की तिलावत किया करते थे, चुनान्चे मन्क़ूल है कि शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पन्दरह साल तक रात भर में एक कुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بہجۃ الاسرار، ص118) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ रोज़ाना एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल अदा फ़रमाते थे। (تفریح الخاطر، ص 35) ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक रात जब मैं ने अपने मा'मूलात (या'नी इ़बादात) का इरादा किया तो नफ़्स ने सुस्ती करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इ़बादत करने का मश्वरा दिया, जिस जगह दिल में येह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक़्त एक क़दम पर खड़े हो कर मैं ने एक कुरआने करीम ख़त्म किया। (بہجۃ القادریہ)

नमाज़ में सुस्ती क्यूं ?

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारी सुस्ती के तो क्या कहने ! फ़ज्र की अज़ान पर आंख खुल गई, घड़ी देखी, अभी तो जमाअ़त में थोड़ी देर है, फिर 15 मिनट के लिये सो जाते हैं। फिर उठे तो सूरज तुलूअ़ हो चुका और नमाज़ क़ज़ा हो गई, चलो क़ज़ा कर के पढ़ लेंगे, नमाज़ क़ज़ा होने का अफ़्सोस भी नहीं होता, येह कितनी बड़ी मुसीबत है, थोड़ी सी मसरूफ़िय्यत होती है, चलो भई क़ज़ा पढ़ लेंगे। औ़रतें इस बला में ज़ियादा पड़ती हैं, शॉपिंग सेन्टर जाएंगी, नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ लेंगी। येह भी वोह जो नमाज़ी हैं, जो नमाज़ नहीं पढ़तीं उन की तो बात ही अलग है। किसी की शादी या दा'वत में गए तो इस्लामी भाइयों की भी नमाज़ गई, जिन को जज़्बा होगा हो सकता है वोह भाग कर शायद मस्जिद में पढ़ लें, औ़रतें तो इस की भी परवा नहीं करतीं। ऐसा न करें ! आप दुन्या में कहीं भी हों, शॉपिंग सेन्टर या बाज़ार, शरई़ पर्दे की रिआ़यत के साथ नमाज़ की पाबन्दी करनी है, बल्कि ऐसे अवक़ात में जाएं कि उस में नमाज़ का वक़्त न हो, अपना काम निमटा कर फ़ौरन घर आ जाएं और घर आ कर इत़्मीनान से नमाज़ अदा करें और अगर आप के साथ कोई मह़रम है तो नमाज़ों के अवक़ात के इ़लावा उ़मूमन मस्जिद ख़ाली होती है, वहां पर्दे में वुज़ू वग़ैरा करवा कर नमाज़ पढ़ा दें। जब मेरे साथ सिक्यूरिटी के मुआ़मलात नहीं थे, तो किसी मस्जिद में, मैं ने ख़ुद अपनी बच्ची, बच्चों की अम्मी को सफ़र वग़ैरा में नमाज़ पढ़ाई है, घर नहीं पहुंच सकते, चलो यहीं नमाज़ पढ़ लेते हैं। अगर जज़्बा होगा तो आप कर सकते हैं।

अफ़्सोस ! हम नमाज़ के मुआ़मले में सन्जीदा (Serious) नहीं हैं। याद रखिये ! बहाना वोह बताएं जो क़ियामत में आप को बचा सके, वरना एक

दूसरे को हम मुत़्मइन कर लेते हैं, रब को सब ख़बर है। जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन को भी नमाज़ी बन जाना चाहिये, वरना मरने के बा'द बहुत पछताएंगे।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी   क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

वस्वसा और उस का जवाब

हो सकता है किसी के ज़ेह्न में येह ख़याल आए कि बुज़ुर्गाने दीन رحمۃ اللہ علیہم इतनी ज़ियादा इ़बादत कैसे किया करते थे ! रोज़गार और फिर हज़ार हज़ार रक्अ़तें पढ़ लेना, पहली बात तो येह कि इतनी रक्अ़तें आ़म आदमी नहीं पढ़ सकता, येह उन की करामत है, जैसा कि मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ जब घोड़े पर सुवार होने लगते तो एक रिकाब (या'नी पेडल) में मुबारक क़दम रखते फिर दूसरा क़दम रिकाब तक लाते तो इन चन्द सेकन्डों के वक़्फ़े में पूरा क़ुरआने करीम तिलावत कर लिया करते थे, येह आप की करामत थी। (شواہد النبوۃ، ص212)

सोशल मीडिया की एक पोस्ट

नेक बन्दों के दिल मह़ब्बते इलाही और तक़्वे से आबाद होते हैं, येह अपने दिलों से दुन्या की मह़ब्बत निकाल देते हैं, इन की रूहें ज़िक्रे इलाही के बिग़ैर बेचैनो बे क़रार रहती हैं, इस लिये वोह हर लम्ह़ा यादे इलाही में मसरूफ़ रहते हैं और येह मक़ाम इ़बादतो रियाज़त में सख़्त मेह़नत करने से ह़ासिल होता है। सोशल मीडिया की एक पोस्ट (कुछ तब्दीली के साथ बयान करता हूं) जिस में किसी ने कुछ यूं चोट की थी : किसी ने दूसरे से सुवाल किया कि बुज़ुर्गाने दीन कैसे सारी सारी रात नमाज़ व क़ुरआन पढ़ते गुज़ार लेते थे ? तो सामने वाले ने जवाब दिया कि आज जिस त़रह़ लोग सारी

सारी रात सोशल मीडिया पर Chatting या'नी बातचीत करने, वीडियोज़ देखने वग़ैरा में गुज़ार देते हैं और बारहा थकन व कोफ़्त का इज़्हार भी नहीं होता, तो बुज़ुर्गाने दीन का चैनो क़रार यादे परवर्दगार में था जिस वज्ह से वोह अपने पाक परवर्दगार की याद में इस त़रह़ मश्ग़ूल हो जाते कि सारी रात गुज़र जाने का पता न चलता और हम दुन्या की लज़्ज़तों में ऐसे बद मस्त हैं कि हमें दुन्यावी ख़्वाहिशात से होश ही नहीं आता।

सारी सारी रात गुनाहों, गपशप, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़, नाचरंग की मह़फ़िलों में गुज़र जाए, ऐसा लगता है जैसे रात छोटी पड़ गई। जैसे ही नमाज़ पढ़ने की बारी आती है बिल्कुल जान पे आ जाती है, पानी बड़ा ठन्डा है! नमाज़ कैसे पढ़ेंगे! अभी थकन है, कल फ़ज्र में दोनों इकठ्ठी पढ़ लेंगे, येह हमारी क़ौम की ह़ालत है। **अल्लाह** करीम ग़ौसे पाक के सदक़े हम सब को पाबन्दी से सह़ीह़ नमाज़ पढ़ने की सआ़दत बख़्शे। **अल्लाह** करे हम सब पक्के नमाज़ी बन जाएं, ऐसी आमीन कहें कि शैत़ान को भी झटका आ जाए, اِنْ شَآءَاللّٰہ हम पक्के बा जमाअ़त नमाज़ें पढ़ने वाले बनेंगे।

ग़ौसे पाक को शैत़ान ने इ़बादत में सुस्ती दिलाई तो आप ने सारी रात एक पाउं पर खड़े हो कर क़ुरआने करीम ख़त्म किया तो हम भी ग़ौसे पाक के मुरीद हैं। दुन्या इधर की उधर हो जाए, बारिश हो, तूफ़ान हो, ज़ल्ज़ले हों, ओले बरस रहे हों, हम नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم

हर इ़बादत से बरतर इ़बादत नमाज़
सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़

क़ल्बे ग़मगीं का सामाने फ़रह़त नमाज़
है मरीज़ों को पैग़ामे सिह़ह़त नमाज़

नारे दोज़ख़ से बेशक बचाएगी येह
रब से दिलवाएगी तुम को जन्नत नमाज़

भाइयो! गर ख़ुदा की रिज़ा चाहिये
आप पढ़ते रहें बा जमाअ़त नमाज़

भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़ — होगी दुन्या ख़राब आख़िरत भी ख़राब
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़ — बे नमाज़ी जहन्नम का ह़क़दार है
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़ — सह सकोगे न दोज़ख़ का हरगिज़ अ़ज़ाब
मुस्त़फ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़ — या ख़ुदा तुझ से अ़त्तार की है दुआ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बहुत ज़ियादा इबादत

शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه का पन्दरह साल तक येह ह़ाल रहा कि इशा की नमाज़ के बा'द एक पाउं पर खड़े हो जाते और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते पढ़ते रात गुज़ार देते थे। (اخبار الاخیار، ص11) अक्सर एक तिहाई रात में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करते, हर रक्अ़त में सूरतुर्रह़मान या सूरतुल मुज़्ज़म्मिल की तिलावत करते, अगर "सूरतुल इख़्लास" पढ़ते तो उस की ता'दाद सो बार से कम न होती। (تفریح الخاطر، ص35)

नफ़्ल रोज़ों की कसरत

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه निहायत कसरत से रोज़े रखते थे।

तो ग़ौसे पाक के तमाम मानने वाले येह अ़ज़्म करें कि रमज़ान का एक रोज़ा भी बिला उ़ज़्रे शर्ई क़ज़ा नहीं होगा اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيم, और مَعَاذَاللّٰه जितने क़ज़ा हुए उन की सच्ची तौबा कीजिये और उन की क़ज़ा भी कर लीजिये, मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक बा'ज़ अवक़ात दरख़्तों के पत्तों, जंगली बूटियों वग़ैरा से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते। ग़रज़ क़ाइमुल्लैल और साइमुन्नहार (या'नी रात को जागना और दिन को रोज़े रखना) आप की आ़दत बन चुकी थी।

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबिल फ़त्ह़ हरवी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमत में चन्द रातें

गुज़ारीं, आप का येह ह़ाल था कि रात के अव्वल ह़िस्से में कुछ देर नमाज़ पढ़ते फिर ज़िक्र करते रहते यहां तक कि रात का पहला तिहाई (one-third) ह़िस्सा गुज़र जाता और येह ज़िक्र करते "اَلْمُحِيْطُ الرَّبُّ الشَّهِيْدُ الْحَسِيْبُ الْفَعَّالُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ" मैं ने देखा कि कभी आप का जिस्म कमज़ोर हो जाता और कभी फ़र्बा, कभी हवा में बुलन्द होते और मेरी नज़रों से ग़ाइब हो जाते फिर (थोड़ी देर बा'द आ जाते और) नमाज़ में खड़े हो कर कुरआने करीम पढ़ते रहते यहां तक कि रात का दूसरा तिहाई ह़िस्सा गुज़र जाता। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सज्दे बहुत त़वील करते, अपने चेहरे को ज़मीन से लगाते। फिर तुलूए़ फ़ज्र तक मुराक़बा व मुशाहदे में बैठे रहते फिर निहायत इ़ज्ज़ो इन्किसार और खुशूअ़ से दुआ़ मांगते, उस वक़्त आप को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से ग़ाइब हो जाते यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र के लिये दौलत कदे से बाहर निकलते। (بہجۃ الاسرار، ص164)

ग़ौसे पाक का ख़ौफ़े ख़ुदा

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! **अल्लाह** वालों का हमेशा से येह त़रीक़ा रहा है कि ढेरों नेकियां करने और गुनाहों से बचने के बा वुजूद वोह बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे। हमारे आक़ा, हमारे मुर्शिद ग़ौसे पाक भी बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे, चुनान्चे ह़ज़रते शरफ़ुद्दीन सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ह़रमे का'बा में देखा गया कि कंकरियों पर सर रखे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : "ऐ रब्बे करीम ! मुझे बख़्श दे और अगर मैं सज़ा का ह़क़दार हूं तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि नेकोकार लोगों के सामने शरमिन्दा न होना पड़े।" (गुलिस्ताने सा'दी, स. 54)

ग़ौसे पाक की ईद

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه औलिया के सरदार हैं लेकिन ख़ौफ़े ख़ुदा का जो आ़लम था इस का अन्दाज़ा आप की त़रफ़ मन्सूब इन अश्आ़र से लगाया जा सकता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ईद के दिन फ़रमाया (उन अश्आ़र का तरजमा) : "लोग कह रहे हैं : "कल ईद है ! कल ईद है !" और सब ख़ुश हैं। लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन ईद होगा।" (फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 309)

है अ़त्तार को सल्बे ईमां का धड़का बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म
हो अ़त्तार की बे सबब बख़्शिश आक़ा येह फ़रमाएं ह़क़ से दुआ़ ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 551, 554)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हम ग़ौसे पाक के कैसे आ़शिक़ हैं कि हमारे पीरो मुर्शिद तो पीराने पीर, वलियों के अमीर हो कर भी इतनी इतनी इ़बादतें करें और एक हम हैं कि हम से फ़र्ज़ नमाज़ भी न पढ़ी जाए और पढ़ें भी तो बिला इजाज़ते शर्ई़ जमाअ़त के बिग़ैर। याद रखिये ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो (एक) नमाज़ क़ज़ा करता है तो वोह हज़ारों साल जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/158) और येह भी याद रखिये कि जान बूझ कर बिला इजाज़ते शर्ई़ जमाअ़त छोड़ना भी सख़्त गुनाह है। मह़ब्बत करने वाला अपने मह़बूब के नक़्शे क़दम पर चलता (या'नी उस को Follow करता) है। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि मह़ब्बते ग़ौसे आ'ज़म का दम भरने के साथ साथ नमाज़ों की पाबन्दी करें, फ़र्ज़ रोज़े रखें, हमेशा हर ह़ाल में सच बोलें और अपने पाक परवर्दगार से डरते रहें। काश काश काश !!!

गुनाहों ने मुझ को कहीं का न छोड़ा — न हो जाऊं बरबाद या ग़ौसे आ'ज़म

मुझे नफ़्से ज़ालिम पे कर दीजे ग़ालिब — हो नाकाम हमज़ाद या ग़ौसे आ'ज़म

मेरे क़ल्ब से हुब्बे दुन्या की मुर्शिद — उखड़ जाए बुन्याद या ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 555, 556)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दीदारे मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिरी जीलानी رحمۃ اللہ علیہ ने एक मरतबा मिम्बर पर खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : मुझ पर एक मरतबा मंगल के दिन ज़ोह्र से पहले रसूले पाक صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने करम फ़रमाया, अपनी ज़ियारत से नवाज़ा और इर्शाद फ़रमाया : "बेटा ! बयान क्यूं नहीं करते ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे नानाजान صلی اللہ علیہ والہ وسلم ! मैं अ़जमी (ग़ैरे अ़रबी) हूं, फ़ुसह़ाए बग़दाद (बग़दाद के बड़े बड़े फ़सीह़ या'नी साफ़ ज़बान बोलने वालों) के सामने कैसे बयान करूं ?" तो प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "**बेटा ! मुंह खोलो ।**" मैं ने अपना मुंह खोला तो आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने मेरे मुंह में सात मरतबा लुआ़बे दहन (थूक मुबारक) डाल कर इर्शाद फ़रमाया : "लोगों के सामने बयान किया करो और उन्हें अच्छी अच्छी ह़िक्मतों और नसीह़तों के ज़रीए़ राहे ख़ुदा की त़रफ़ बुलाया करो ।" फिर मैं ने नमाज़े ज़ोह्र अदा की और बैठ गया, मेरे पास बहुत से लोग जम्अ़ हो गए, मुझ पर एक अ़जीब सा ख़ौफ़ त़ारी था कि अचानक मैं ने विज्दानी कैफ़िय्यत में देखा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ मेरे सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं और फ़रमा रहे हैं कि "ऐ बेटे ! बयान क्यूं नहीं

कर रहे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे वालिद ! मुझ पर ख़ौफ़ सा त़ारी है।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! अपना मुंह खोलो।" मैं ने मुंह खोला तो आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मेरे मुंह में छे मरतबा लुआ़ब (थूक मुबारक) डाला। मैं ने अ़र्ज़ की : "आप ने सात बार क्यूं नहीं डाला ?" तो फ़रमाने लगे : "**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदब की वज्ह से (या'नी उन्हों ने सात बार डाला तो इस लिये मैं ने एक बार कम छे बार डाला)।" फिर वोह मेरी निगाहों से ग़ाइब हो गए और मैं ने बयान शुरूअ़ कर दिया। (بہجۃ الاسرار، ص58)

उ़लूमो फ़ुयूज़े शहन्शाहे त़यबा   हैं सीने में तेरे निहां ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

ग़ौसे पाक की नेकी की दा'वत

शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने नेकी की दा'वत आ़म करने का आग़ाज़ माहे शव्वालुल मुकर्रम 521 हि. में बग़दादे मुअ़ल्ला के मशरिक़ (या'नी East) में मौजूद ह़ल्बा नामी मह़ल्ले में होने वाले एक अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाअ़ में बयान से किया। उस अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाअ़ में हैबतो रौनक़ छाई हुई थी, औलियाए किराम और फ़िरिश्तों ने उसे ढांपा हुवा था, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने किताबो सुन्नत की वज़ाह़त के साथ लोगों को **अल्लाह** पाक की त़रफ़ बुलाया तो लोग इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी के लिये जल्दी करने लगे। (بہجۃ الاسرار، ص174) शहज़ादए ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "**वालिदे मोह़तरम हुज़ूर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने 521 हि. से 561 हि. तक चालीस साल मख़्लूक़ को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाई।**" (بہجۃ الاسرار، ص184)

आवाज़े मुबारक सब को बराबर सुनाई देती

शहन्शाहे बग़दाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिसे मुबारक में बा वुजूद येह कि शुरकाए इज्तिमाअ़ बहुत ज़ियादा होते थे लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आवाज़े मुबारक जैसी नज़्दीक वालों को सुनाई देती थी वैसी ही दूर वालों को भी सुनाई देती थी या'नी दूर और नज़्दीक वालों के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आवाज़े मुबारक यक्सां (या'नी एक जैसी) थी। (بہجۃ الاسرار، ص181)

हज़रते इब्राहीम बिन सईद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब हमारे शैख़ हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आलिमों वाला लिबास पहन कर ऊंचे मक़ाम पर खड़े हो कर बयान फ़रमाते तो लोग आप के कलामे मुबारक को बग़ौर सुनते और उस पर अ़मल करते। (بہجۃ الاسرار، ص189 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! क़ुरबान जाइये मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक की मुबारक आवाज़ पर ! आप की येह जीती जागती करामत थी कि जैसी पहले आदमी को आवाज़ आ रही है हज़ारवें, दस हज़ारवें आदमी को भी वैसी ही आवाज़ आती थी और سُبْحٰنَ الله ! आप का सत्तर सत्तर हज़ार अफ़राद का इज्तिमाअ़ होता था, हमारी आवाज़ लाउड स्पीकर के ज़रीए़ भी दूर पहुंचाने के लिये प्रोब्लेम होती है, कभी साउन्ड एक दम तेज हो जाता है कभी मध्धम।

70 हज़ार का इज्तिमाअ़

मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि शुरूअ़ शुरूअ़ में सोते जागते मुझ पर बस اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) की धुन सुवार रहती और मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत के लिये इस क़दर बे क़रार रहता कि खुद

पर भी इख़्तियार न रहता और मेरे पास दो तीन आदमी भी होते तो मैं उन्हें ही कुरआनो सुन्नत की बातें सुनाने लगता फिर मेरे पास लोगों का इतना कसीर हुजूम होने लगा कि मजलिस में जगह बाक़ी न रही । चुनान्चे मैं ईदगाह चला गया और वहां वा'ज़ो नसीहत करने लगा, वहां भी जगह तंग हो गई तो लोग मेरा मिम्बर शहर के बाहर ले गए और बे शुमार मख़्लूक़ सुवार और पैदल हो कर आती और इज्तिमाअ़ के बाहर इर्द गिर्द खड़ी हो कर वा'ज़ सुनती हत्ता कि सुनने वालों की ता'दाद सत्तर हज़ार (70000) के क़रीब पहुंच गई । (بہجۃ الاسرار، ص177 ملخصًا)

मैं भी कभी तो सुन लूं मीठा कलाम कहना
वा'ज़ों की तेरे मुर्शिद है धूम चार जानिब

जिस दम हो ज़िन्दगी का लबरेज़ जाम कहना
जल्वा दिखाना मुर्शिद कलिमा पढ़ाना मुर्शिद

फ़रियाद कर रहा है तेरा ग़ुलाम कहना
उफ़्ताद आ पड़ी है इमदाद की घड़ी है

मुर्शिद हो दुश्मनों का क़िस्सा तमाम कहना
साइल नवाज़िशों का कहता था साज़िशों का

फिर ख़ूब मुस्कुरा कर करना कलाम कहना
अ़त्तार को बुला कर मुर्शिद गले लगा कर

रो रो के मुर्शिदी से मेरा पयाम कहना
बग़दाद के मुसाफ़िर मेरा सलाम कहना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बयाने ग़ौसे पाक में औलियाए किराम की हाज़िरी

मन्क़ूल है कि ग़ौसे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ जब वा'ज़ के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप जूंही اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहते तो रूए ज़मीन में जिस क़दर औलियाए किराम थे ख़्वाह वोह इज्तिमाअ़ में मौजूद होते या न होते सब ख़ामोश हो जाते, येही वज्ह है कि आप एक बार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहने के बा'द थोड़ी देर ठहरते और फिर बयान का आग़ाज़ फ़रमाते और इतनी देर में

इज्तिमाअ़ में इस क़दर हुजूम हो जाता कि जिस क़दर लोग नज़र आ रहे होते उस से कहीं ज़ियादा सुनने वाले और ह़ाज़िरीन ऐसे होते जो ज़ाहिरी आंख से नज़र न आते थे। (اخبار الاخیار، ص 12) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शुरकाए इज्तिमाअ़ के दिलों के मुत़ाबिक़ बयान फ़रमाते और कश्फ़ के साथ उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते, जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मिम्बर पर खड़े होते तो आप के जलाल की वज्ह से लोग भी खड़े हो जाते थे और जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उन से ख़ामोश होने का फ़रमाते तो सब ऐसे ख़ामोश हो जाते कि आप की हैबत की वज्ह से उन की सांसों के इ़लावा कुछ भी सुनाई न देता। (بہجۃ الاسرار، ص 181)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौसे है बाला तेरा — ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा — औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा
क्या दबे जिस पे ह़िमायत को हो पन्जा तेरा — शेर को ख़त़रे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
ग़रज़ आक़ा से करूं अ़र्ज़ कि तेरी है पनाह — बन्दा मजबूर है ख़ात़िर पे है क़ब्ज़ा तेरा
हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी — दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा
फ़ख़्रे आक़ा में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ़ — चल लिखा लाएं सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की आमद

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस शरीफ़ में तमाम औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم जिस्मानी ह़यात और अरवाह़ के साथ (या'नी अपनी रूहों के साथ) नीज़ जिन्न और मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) तशरीफ़ फ़रमा होते थे और (कई बार तो) रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तरबियतो

हिमायत फ़रमाने के लिये तशरीफ़ फ़रमा होते थे, हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام अक्सर अवक़ात मजलिस शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा होते थे और न सिर्फ़ ख़ुद तशरीफ़ लाते बल्कि उस दौर के जिस भी बुज़ुर्ग से आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुलाक़ात होती तो उन को भी मुर्शिदी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस में हाज़िर होने की ताकीद फ़रमाते कि "**जिस को भी काम्याबी की ख़्वाहिश हो उस को ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस शरीफ़ की हमेशा हाज़िरी ज़रूरी है।**" (اخبار الاخیار، ص 13)

जिसे शक हो वोह ख़िज़्र से पूछ देखे　　तेरी मजलिसों का समां ग़ौसे आ'ज़म

ख़्वाब का मन्ज़र बेदारी में

मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन बयान फ़रमा रहे थे और आप के मुरीदे ख़ास और पहले ख़लीफ़ा शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आप के क़रीब बैठे हुए थे कि उन को नींद आ गई तो मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अहले मजलिस से फ़रमाया : ख़ामोश रहो। और आप मिम्बर से नीचे उतर आए और शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने बा अदब खड़े हो गए और उन की त़रफ़ देखते रहे। जब शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़्वाब से बेदार हुए तो हज़रत ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन से इर्शाद फ़रमाया कि आप ने ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा है ? उन्हों ने जवाब दिया : जी हां। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं इसी लिये तो बा अदब खड़ा हो गया था। फिर आप ने पूछा कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को क्या

नसीह़त फ़रमाई ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **"शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िरी को लाज़िम कर लो ।"** इस के बा'द लोगों ने शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से पूछा कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के इस फ़रमान का क्या मत़लब था कि मैं इसी लिये बा अदब खड़ा हो गया था तो वलिय्ये कामिल शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : **"मैं जो कुछ ख़्वाब में देख रहा था, ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ उस को जागती आंखों से बेदारी में देख रहे थे ।"** (بہجۃ الاسرار، ص58)

बोलबाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा *وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर*

बयाने ग़ौसे आ'ज़म में जिन्नात की शिर्कत

ह़ज़रते शैख़ अबू ज़करिय्या यह़्या बिन अबी नस्र सह़रावी के वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने एक दफ़्अ़ा अ़मल के ज़रीए़ जिन्नात को बुलाया तो उन्हों ने कुछ ज़ियादा देर कर दी, फिर वोह मेरे पास आए और कहने लगे कि **"जब शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ बयान फ़रमा रहे हों तो उस वक़्त हमें बुलाने की कोशिश मत किया करो ।"** मैं ने कहा : वोह क्यूं ? जिन्नात ने कहा कि हम हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की मजलिस में ह़ाज़िर होते हैं । मैं ने कहा : तुम भी उन की मजलिस में जाते हो ? उन्हों ने कहा : हां ! हम मर्दों में कसीर ता'दाद में होते हैं, हमारे बहुत से गुरौह हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया है और इन सब ने हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के हाथ पर तौबा की है । (بہجۃ الاسرار، ص180)

13 उ़लूम में बयान

हज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : **हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तेरह उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे ।** और हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मद्रसे में लोग आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह और इ़ल्मुल कलाम पढ़ते थे, दोपहर से पहले और बा'द दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बा'द क़िराअतों के साथ क़ुरआने करीम की ता'लीम देते थे । (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/179۔ بہجۃ الاسرار، ص225)

मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक हफ़्ते में तीन बार बयान फ़रमाते थे, मद्रसे में जुमुआ़ की सुब्ह़ को, मंगल की शाम को और सराए में इतवार की सुब्ह़ को । (قلائد الجواہر، ص18)

आप की मजलिस में 400 ज़बर दस्त आ़लिम आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तक़रीर लिखा करते थे और बसा अवक़ात मजलिस की ह़ालत में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हवा पर चन्द क़दम उड़ कर फिर कुरसी पर आ कर तशरीफ़ फ़रमा हो जाया करते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा जी चाहता है कि जिस त़रह़ मैं पहले था अब भी जंगलों में रहूं कि न मैं लोगों को देखूं न वोह मुझे देखें । फिर फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक ने मुझ से येह चाहा कि लोगों को फ़ाएदा पहुंचे क्यूं कि मेरे हाथ पर यहूदो नसारा में से पांच सो से ज़ियादा मुसल्मान हुए हैं और मेरे हाथ पर एक लाख से ज़ाइद बे अ़मल ताइब हुए (या'नी तौबा की) और येह बड़ी नेकी है । (بہجۃ الاسرار، ص184ملتقطاً)

बयां सुन के तौबा गुनहगार कर लें ज़बां में वोह दे दो असर ग़ौसे आ'ज़म

ग़ैर मुस्लिमों का क़बूले इस्लाम

एक मरतबा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में 13 ग़ैर मुस्लिम आए और आप के हाथ पर मजलिसे वा'ज़ में मुसल्मान हुए फिर कहने लगे कि हम मग़रिब (या'नी West) के अ़लाक़े के नसारा हैं। हम ने इस्लाम का इरादा किया लेकिन हमें तरद्दुद (शक) था कि कहां जा कर इस्लाम लाएं, कुछ फ़ैसला नहीं कर पाते थे। तब हम ने ग़ैब से आवाज़ सुनी कि **"ऐ काम्याब गुरौह ! तुम बग़दाद जाओ और शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के हाथ पर मुसल्मान हो जाओ क्यूं कि उन की बरकत से तुम्हारे दिलों में वोह ईमान दिया जाएगा कि जो और जगह ह़ासिल न होगा।"**

(بہجۃالاسرار، ص185)

क़ल्बे मुर्दा को भी ठोकर से जिला दो मुर्शिद

बिल यक़ीं तुम ने तो मुर्दों को जिलाया या ग़ौस

इमामुन्नह़्व बना दिया

इमाम अबू मुह़म्मद बिन ख़श्शाब नह़्वी कहते हैं : मैं जवानी की ह़ालत में इ़ल्मे नह़्व (अ़रबी ग्रामर) पढ़ा करता था। मैं लोगों से हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के दिल नशीन बयान की ख़ूबियां सुना करता था। मैं इरादा करता था कि मैं आप का बयान सुनूं मगर मेरे पास वक़्त नहीं होता था। एक दिन मैं ने पक्का इरादा कर लिया और हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हो गया, जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने बयान शुरूअ़ किया तो मेरे दिल को आप का कलाम सुन कर मज़ा न आया और न ही मैं कलाम

समझ पाया। मैं ने अपने दिल में कहा : मेरा आज का दिन ज़ाएअ़ हो गया। उसी वक़्त हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : तेरे लिये हलाकत हो, तू ज़िक्र की मजलिस पर इल्मे नह़्व (अ़रबी ग्रामर) को फ़ज़ीलत देता है और इस को इख़्तियार करता है? हमारी सोह़बत इख़्तियार कर, हम तुझे (अ़रबी ग्रामर के मश्हूर इमाम) सीबवैह बना देंगे। येह सुन कर अ़ब्दुल्लाह ख़श्शाब नह़्वी ग़ौसे पाक की सोह़बत में रहने लगे जिस का नतीजा येह ज़ाहिर हुवा कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नह़्व के साथ कई उ़लूम में माहिर (Expert) हो गए। (قلائد الجواہر، ص32۔ تاریخ الاسلام للذہبی، 39/267)

सुल्त़ाने विलायत ग़ौसे पाक	वलियों पे हुकूमत ग़ौसे पाक
शहबाज़े ख़ित़ाबत ग़ौसे पाक	फ़ानूसे हिदायत ग़ौसे पाक
अल्लाह की रह़मत ग़ौसे पाक	हैं बाइ़से बरकत ग़ौसे पाक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।